भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए २६ २० अगस्त से २ सितंबर २०२६ तक ग्यारहवी साप्ताहिक सलाह

अ. मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें**: फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें**: थ्रिप्स, चेपा, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।

- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मुलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभीउपयोगकरें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

ब. स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त							अगस्त				
		18	**19**	**20**	**21**	**22**	**23**	**24**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**
	हिसार	0	0	3.3	0	0	0	0	0.1	0.2	0	0	0
	जींद								0	0.1	0.2	0	0
	सिरसा								0.2	0.1	0	0	0
	रोहतक	0	0	1	0	0	0	0	0.1	0	0.4	0.3	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2. (मिमी)		2.5 to 15.5मिमी		15.6 to 64.4मिमी			64.5 to115.5) मिमी)			115.6 to 204.4(मिमी)	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल फूल आने से लेकर बॉल (टिंडे) खुलने की अवस्था तक 91 से 126 दिन की हो गई है। हाथों से निराई-गुड़ाई और कीटनाशक का छिड़काव किया गया। ज़्यादातर खेतों में मोथा, सांठी और मकरा जैसे खरपतवारों का प्रकोप है। 13:00:45 खाद का 2 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से पत्तियों पर छिड़काव (फोलियर एप्लीकेशन) करने की सलाह दी जाती है। कई खेतों में व्हाइटफ्लाई (सफेद मक्खी) की संख्या नुकसान पहुँचाने वाले स्तर से ऊपर पहुँच गई है और चिपचिपे मीठे मल व काले रंग की फफूंद के लक्षण भी दिखे हैं, जबकि इस दौरान हरा तेला का प्रकोप कम हुआ है। कई खेतों में पिंक बॉलवर्म का प्रकोप देखा गया। कुछ खेतों में कुछ जगहों पर जड़ सड़न, विल्ट और कॉटन लीफ कर्ल वायरस की बीमारी देखी गई। किसानों ने तनाव के कारण खुले हुए कपास को चुनना शुरू कर दिया है।

सिरसा में, फसल 100 से 120 दिन की है और बॉल बनने व विकसित होने की अवस्था में है। सिंचाई के साथ-साथ नाइट्रोजन वाली खाद को अलग-अलग बार में (स्प्लिट डोज़) दिया गया और जहाँ फसल का फैलाव (कैनोपी) सही था, वहाँ हाथों से निराई-गुड़ाई की गई। कीटों और बीमारियों के प्रबंधन के लिए कीटनाशक का छिड़काव और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पत्तियों पर छिड़काव किया गया। कपास के खेतों में कुछ जगहों पर खरपतवार का प्रकोप देखा गया। हरा तेला की संख्या 03-15 प्रति तीन पत्तियाँ रही; व्हाइटफ्लाई की संख्या आर्थिक नुकसान के स्तर (इकोनॉमिक थ्रेशोल्ड) से ऊपर बढ़कर 10-58 प्रति तीन पत्तियाँ हो गई और थ्रिप्स की संख्या भी आर्थिक नुकसान के स्तर (इकोनॉमिक थ्रेशोल्ड) से ऊपर 05-30 निम्फ और वयस्क प्रति तीन पत्तियाँ रही। पिंक बॉलवर्म का प्रकोप भी आर्थिक नुकसान के स्तर (इकोनॉमिक थ्रेशोल्ड) से ऊपर पाया गया, जिससे 10-20% हरे बॉल (टिंडे) को नुकसान पहुँचा।

सलाह:

हिसार में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास की फसल में सिंचाई करें। फल लगने के मुख्य समय पर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 का 2 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से फोलियर स्प्रे (पत्तों पर छिड़काव) करें। सही समय पर ट्रैक्टर से यांत्रिक निराई-गुड़ाई करें और उसके बाद कसौला (हाथ के औज़ार) से निराई-गुड़ाई करें। रस चूसने वाले कीटों की

संख्या आर्थिक नुकसान के स्तर (इकोनॉमिक थ्रेशोल्ड) को पार कर रही है, इसलिए 20 पौधे प्रति एकड़ के हिसाब से इन कीटों (थ्रिप्स, सफेद मक्खी और जैसिड) की निगरानी करने की ज़रूरत है। यह मौसम सफेद मक्खी और हरा तेला के पनपने के लिए अनुकूल है। हरा तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए, फ्लोनिकैमिड 50 WG (80 ग्राम प्रति एकड़) और एफिडोपाइरोपेन 50 G/L DC (400 मिली प्रति एकड़) का छिड़काव करें। अगर सफेद मक्खी और उनके निम्फ (बच्चों) का हमला मध्यम से ज़्यादा हो, तो पाइरीप्रॉक्सीफेन 10 EC (400 मिली प्रति एकड़) या स्पाइरोमेसिफेन 240 SC (240 मिली प्रति एकड़) का छिड़काव करें। कीटनाशकों को आपस में मिलाकर (टैंक मिक्सिंग) इस्तेमाल न करें। चूंकि गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) का हमला शुरू हो गया है, इसलिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं। गुलाबी सुंडी के हमले की जांच के लिए प्रति एकड़ कम से कम 100 फूलों या 20 हरे डोड़ों (बॉल्स) को देखें। फूल आने के शुरुआती दौर में संक्रमित और रोसेट (गुलाब के फूल जैसे मुड़े हुए) फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। अगर फूलों/डोड़ों में गुलाबी सुंडी का हमला आर्थिक नुकसान के स्तर (>5-10%) से ज़्यादा हो जाए, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5SG (100 ग्राम प्रति एकड़) या प्रोफेनोफोस 50 EC (600 मिली प्रति एकड़) या क्विनालफॉस 20 AF (800 मिली प्रति एकड़) का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद किसी दूसरे कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और विल्ट (मुरझाने) से प्रभावित हिस्सों में, प्रभावित जड़ों को कार्बेन्डाजिम 50 WP (1.2 ग्राम प्रति लीटर पानी) के घोल से भिगोएं (ड्रेन्चिंग करें)। अगर पैराविल्ट के लक्षण दिखें, तो लक्षण दिखने के तुरंत बाद से एक हफ़्ते के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP (250 ग्राम) या कार्बेन्डाज़िम 50% WP (120 ग्राम) और यूरिया (2 किग्रा) को 100 लीटर पानी में मिलाकर ड्रेंचिंग (जड़ों के पास डालना) करें। नमी सूखने के बाद अच्छी तरह खुले हुए बॉल्स (टिंडे) की तुड़ाई करें। बॉल रॉट (टिंडे की सड़न) के प्रबंधन के लिए, फूल आने के समय (60-120 दिन) और मौसम की स्थिति के अनुसार, 10 लीटर पानी में कार्बेन्डाज़िम 12% + मैनकोज़ेब 63% WP (30 ग्राम) का छिड़काव करें; इसके बाद प्रोपिनेब 70% WP (25-30 ग्राम) या प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC (10 मिली) या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w SC (10 मिली) या फ्लक्सापाइरॉक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर SC (6 मिली) का छिड़काव करें। अगर सूटी मोल्ड (काली फफूंदी) की समस्या हो, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC (10 मिली/10 लीटर या 500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50% WP (25 ग्राम/10 लीटर या 1250 ग्राम/हेक्टेयर) का 1-2 बार बचाव या इलाज के तौर पर छिड़काव करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे ज़रूरत के अनुसार खेतों में सिंचाई करें और सिंचाई या बारिश के बाद यूरिया की बची हुई खुराक डालें। फसल को खरपतवार-मुक्त रखने के लिए कसोला/खुरपा से निराई-गुड़ाई करें। खेत की मेड़ों और आस-पास की जगहों को खरपतवार, कुकुरबिट्स (जैसे कद्दू, खीरा, तोरई आदि) और सफ़ेद मक्खी व कपास में पत्ता मरोड़ रोग फैलाने वाले अन्य पौधों से मुक्त रखें। N:P:K (13:0:45) का 2.0 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के हिसाब से पत्तियों पर छिड़काव शुरू करें और इसे 10 दिन के अंतराल पर 2-3 बार दोहराएं। सफ़ेद मक्खी की संख्या पर हाथ से या 8-10 पीले चिपचिपे ट्रैप (yellow sticky traps) प्रति एकड़ लगाकर नज़र रखें और खेत की मेड़ों व आस-पास की जगहों को सफ़ेद मक्खी के अन्य वैकल्पिक पौधों से मुक्त रखें। प्रति एकड़ 20 पौधों और हर पौधे की तीन निचली पत्तियों को देखकर हरा तेला और थ्रिप्स जैसे रस चूसने वाले कीटों की निगरानी जारी रखें। सफ़ेद मक्खी के वयस्कों के नियंत्रण के लिए, 150 लीटर पानी में डाइनोटेफ्यूरान 20 एसजी (60 ग्राम) या फ्लोनिकैमिड 50 WG (80 ग्राम) या एफिडोपाइरोपेन 50G/L (400 मिली) या डायफेन्थियुरॉन 50 WP (जहाँ सिंचाई या बारिश के कारण सही नमी हो) (200 ग्राम) या प्रोफेनोफॉस 50 EC (500-800 मिली प्रति एकड़) का छिड़काव करें। अगर सूटी मोल्ड (काली फफूंदी) की समस्या दिखे, तो प्रोपिकोनाज़ोल 25 EC (1 मिली प्रति लीटर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC)50 WP (2.5 ग्राम प्रति लीटर) का 10-15 दिन के अंतराल पर एक या दो बार छिड़काव करें। जहाँ हरा तेला की संख्या ETL (2 निम्फ/पत्ती) से ज़्यादा हो जाए, वहाँ 150 लीटर पानी में टॉल्फेनपायराड 15 EC (300-400 मिली) या फेनपाइरोक्सिमेट 5 EC (300 मिली) या Dinotefuran 20 SG (60 ग्राम प्रति एकड़) का छिड़काव करके हरा तेला के हमले को नियंत्रित करें। सफ़ेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएं। थ्रिप्स और PBW की शुरुआती आबादी को 5% नीम के बीज के अर्क (NSKE) या एज़ाडिराक्टिन 1500 ppm (0.15% EC) को 5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है। पिंक बॉलवर्म की आबादी को नियंत्रित करने के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5 SG (100 ग्राम) या स्पिनेटोरम 11.7 SC (170 मिली) या प्रोफेनोफोस 50 EC (500 मिली) प्रति एकड़ का छिड़काव करें

और प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी का उपयोग करें। देसी (आर्बोरियम) कपास में स्पॉटेड बॉलवर्म से 5% फल लगने वाले हिस्सों (जैसे फैले हुए स्क्वायर या गिरे हुए फल) को नुकसान होने पर, 150 लीटर पानी में 75 मिली/एकड़ स्पिनोसैड का छिड़काव करके इसे नियंत्रित किया जा सकता है। भारी बारिश और जलभराव की स्थिति में, फसल को नुकसान से बचाने के लिए खेत से अतिरिक्त पानी निकालने हेतु उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। जड़ सड़न और विल्ट (मुरझाने) की बीमारी के प्रकोप की नियमित निगरानी करें। जड़ सड़न और विल्ट बीमारी को नियंत्रित करने के लिए, शुरुआती लक्षण वाले और उनके आस-पास के पौधों की जड़ों में ट्राइकोडर्मा एसपीपी. 1% WP (50 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% WP (12 ग्राम) प्रति 10 लीटर पानी के घोल से ड्रेंचिंग (जड़ों के पास पानी डालना) करें। पैराविल्ट के लक्षण दिखने पर, लक्षण दिखने के तुरंत बाद से एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP (250 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% WP (120 ग्राम) और यूरिया (2 किग्रा) प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार ड्रेंचिंग करें; या लक्षण दिखने के तुरंत बाद (24 घंटे के भीतर) प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड (10 मिलीग्राम या 100 लीटर पानी में 1 ग्राम) या सोडियम बेंजोएट (50 मिलीग्राम प्रति लीटर या 100 लीटर पानी में 5 ग्राम) का छिड़काव करें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त							अगस्त				
		18	19	20	21	22	23	24	26	27	28	29	30
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	1.8	2	0.3	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0
	नागौर								0.2	0.2	0.1	0.1	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0.2	0.2	0	0	0
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी				64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, फसल 96 से 112 दिन की है और फूल आने की अवस्था में है। हाथ से निराई-गुड़ाई और फसल की देखभाल के अन्य काम किए गए। जैसिड की संख्या 0.0 से 4.00 प्रति तीन पत्तियां, सफेद मक्खी का प्रकोप 2.00 से 12.00 प्रति तीन पत्तियां और थ्रिप्स की संख्या 3.00 से 16.00 प्रति तीन पत्तियां देखी गई।

बांसवाड़ा में, फसल 50 से 56 दिन की है और इसमें स्क्वेयरिंग (कलियां बनने), फूल आने और बॉल (टिंडे) बनने की अवस्थाएं देखी जा रही हैं। फसल की देखभाल और खाद डालने का काम किया गया। खरपतवार का कोई प्रकोप नहीं है। रस चूसने वाले कीटों में, हरा तेला का प्रकोप ETL (आर्थिक नुकसान के स्तर) से ऊपर था। बीमारियों का कोई प्रकोप नहीं है।

सलाह:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, जिन किसानों की फसल 65 दिन से अधिक की हो गई है, उन्हें KNO3 का 2% घोल पत्तियों पर छिड़कने (फोलियर एप्लीकेशन) की सलाह दी जाती है। कपास के खेतों के आसपास से खरपतवार हटा दें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। जिन जगहों पर पिछले साल गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) का प्रकोप देखा गया था, वहां इस साल भी इसके प्रकोप पर कड़ी नज़र रखने की ज़रूरत है। गुलाबी सुंडी की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगाएं। यदि 100 फूलों में से 5 से अधिक फूल 'रोज़ेट' (गुलाब की तरह मुड़े हुए) दिखें या बॉल (टिंडे) में 5% से अधिक प्रकोप हो, तो प्रोफेनोफोस 50% EC (2.00 मिली/लीटर) या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 SG (0.50 ग्राम/लीटर) या इंडोक्साकार्ब 14.5 SC (1.0 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें। हरा तेला और सफ़ेद मक्खी (whitefly) को कंट्रोल करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 WG (0.40 ग्राम/लीटर) या एफिडोपाइरोपेन 50 DC (1.50 मिली/लीटर पानी) या थियामेथोक्सम 24 WG (0.5 ग्राम/लीटर पानी) का स्प्रे करें। सफ़ेद मक्खी के निम्फ (nymph) के मामले में, पाइरीप्रॉक्सीफेन 10% EC (2.5 मिली/लीटर) या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 SC (1.25 मिली/लीटर पानी) का इस्तेमाल करें। थ्रिप्स का हमला ETL (आर्थिक नुकसान के स्तर) से ज़्यादा होने पर, स्पिनेटोरम 11.7 SC (0.84 मिली/लीटर) या प्रोफेनोफोस 50 EC (2 मिली/लीटर

पानी) का स्प्रे करें। काले रंग की फफूंद (सूटी मोल्ड) होने पर, प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC (10 मिली/10 लीटर या 500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50% WP (25 ग्राम/10 लीटर या 1250 ग्राम/हेक्टेयर) का 10-15 दिनों के अंतराल पर 1-2 बार बचाव या इलाज के तौर पर स्प्रे किया जा सकता है।

बांसवाड़ा में, बारिश के अनुमान को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने खेतों में पानी की निकासी का सही इंतज़ाम करें। अगर मिट्टी में नमी है और हाथ से खरपतवार निकालना मुमकिन नहीं है, तो घास वाले खरपतवार के लिए क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 5% EC (2 मिली/लीटर पानी) या चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% EC (1.25 मिली/लीटर पानी) या दोनों तरह के खरपतवार को कंट्रोल करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% EC + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% EC (2-2.5 मिली/लीटर पानी) जैसे हर्बिसाइड का इस्तेमाल करें। रस चूसने वाले कीड़ों के हमले के संकेतों के लिए कपास के खेतों की निगरानी करते रहें। अगर हमला आर्थिक नुकसान के स्तर से ज़्यादा हो जाए, तो रस चूसने वाले कीड़ों को कंट्रोल करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (NSKE) या एज़ाडिराक्टिन 1500 ppm (0.15% EC) (5 मिली/लीटर पानी) का स्प्रे करें। सफ़ेद मक्खी और हरा तेला को कंट्रोल करने के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे ट्रैप (yellow sticky traps) लगाएं। अगर रस चूसने वाले कीड़ों की संख्या ETL (आर्थिक नुकसान के स्तर) से ज़्यादा हो जाए, तो इनमें से किसी भी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 EC (1.25 लीटर/हेक्टेयर), डायफेन्थियुरॉन 50 WP (625 ग्राम/हेक्टेयर) या फ्लोनिकैमिड 50 WG (200 ग्राम/हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) के लिए फेरोमोन ट्रैप (5 प्रति हेक्टेयर) लगाएं। गुलाबी सुंडी के हमले पर लगातार नज़र रखें और प्रभावित फूलों (रोज़ेट फूल) को लार्वा के साथ नष्ट कर दें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त							अगस्त				
		18	19	20	21	22	23	24	26	27	28	29	30
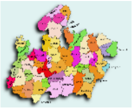	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	22	5.6	2.3	0.5	0.4
	धार	8	0.4	2.1	0.5	0	0.3	0	24	8	1.9	0.5	0.5
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	26	8.7	6.3	1.8	0.2
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी				64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, बोई गई फसल 42 से 90 दिन की हो गई है और अभी वानस्पतिक वृद्धि और बॉल (फल) बनने की अवस्था में है। इस दौरान मौसम बादल वाला रहा और बारिश नहीं हुई। जहाँ ज़रूरत थी, वहाँ खरपतवार हटाने, फर्टिगेशन और सिंचाई का काम किया गया। खेतों में साइनोडोन डैक्टिलोन , साइपरस रोटंडस , आर्जीमोन मैक्सिकाना और फाइलेन्थस निरूरी जैसे मौसमी खरपतवार उग आए हैं। कुछ खेतों में हरा तेला, एफिड और सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी बीमारी की सूचना नहीं मिली है।

सलाह:

खंडवा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि जिन खेतों में फसल 76 दिन से ज़्यादा की हो गई है, वहाँ खरपतवार हटाएँ। अगर मिट्टी में नमी के कारण हाथ से खरपतवार निकालना संभव न हो, तो खरपतवारनाशी का इस्तेमाल करें: घास वाले खरपतवार के लिए क्विज़ालोफॉप एथिल 5% EC (2 मिली/लीटर पानी), चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% EC (1.5 मिली/लीटर पानी), या दोनों तरह के खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% MEC (2-2.5 मिली/लीटर पानी) का इस्तेमाल करें। गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएँ। नाइट्रोजन की 25% मात्रा को कॉलम विधि से 10 से 15 सेमी की गहराई पर दें।

रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए NSKE 5% + नीम का तेल 5 मिली/लीटर या नीम के तेल वाले फॉर्मूलेशन (300 या 1500 ppm) 5 मिली/लीटर + 1.0 ग्राम लॉन्ड्री डिटर्जेंट इमल्शन का इस्तेमाल करें। अगर पैराविल्ट के लक्षण दिखें, तो लक्षण दिखने के तुरंत बाद से एक हफ़्ते के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP (250 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% WP (100 ग्राम) और यूरिया (2 किग्रा) को 100 लीटर पानी में मिलाकर 2-3 बार ड्रेंचिंग (जड़ों के पास घोल डालना) करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट)https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:
Dr. Vijay N. Waghmare
Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere	Dr. A. S. Tayade	Dr. A. H. Prakash	Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain	Dr. Rishi Kumar	Dr. Babasaheb B. Fand	Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P Gawande	Dr. Shivaji Thube	Dr. R.R. Chapke	

Regional language translation:
Hindi : Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi : Dr Amarpreet Singh
Tamil : Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu : Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi : Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati : Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya : Dr B. S. Nayak
Kannada : Dr Neelkanth Hiremani